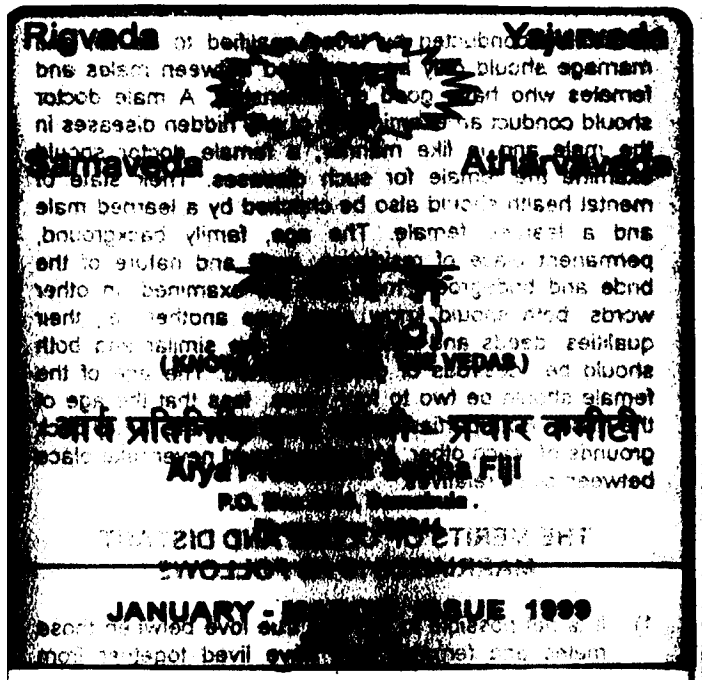

संस्कार
समावर्त्तन संस्कार

यह संस्कार बारहवां संस्कार है। समावर्त्तन - संस्कार का अर्थ है - छात्र का शिक्षा समाप्त कर अपने घर को वापस लौट आना। इस संस्कार का अभिप्राय यह है कि शिक्षा समाप्त करने पर आचार्य शिष्य को उपदेश देता है कि लोक व्यवहार में उसे कैसे बरतना होगा। इसका अभास मिलता है कि अभी तक वह सांसारिक ज्ञान से अन्जान रहा या रही। इसलिए शास्त्र के अनुसार उसे ज्ञान दिया जाये। वह इस प्रकार है -

सदा पुण्य आत्माओं के साथ सब व्यवहारों में साझा रक्खे। इसका अभिप्राय यह है कि गृहाश्रम में प्रवेश करने पर बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है। जो पुण्य आत्मा स्त्री-पुरुष हैं उनके ही साथ अथवा उनकी सम्मति द्वारा व्यवहार करे, जिससे उसे धन आदि की प्राप्ति तथा सिद्धि होती रहे और स्वार्थी तथा दुष्ट स्त्री-पुरुषों से दूर रहे। आजकल के युवक और युवतियां अनुभवहीन होने के कारण उन व्यक्तियों के जाल में जा फंसते हैं जो पाप आत्मा होते हैं, तथा अपनी हानी कर बैठते हैं। यही कारण है कि आज कितने युवकों -युवतियों को विवाहिक सम्बन्ध विच्छेद (Divorce) करने पड़ते हैं। महाविद्वान साथ मिलकर सुन्दर कार्य करने में सफल होते हैं, परन्तु कितनी कम्पनियां, कितने कारखाने, कितनी दुकानें अथवा कितने परिवार तथा भाई-से-भाई क्या इसलिये नहीं टूट रहे कि सब साथ मिलकर काम करने वाले पुण्य आत्मा नहीं होते ? परस्पर प्रीति और सद्व्यवहार करने वाले मनुष्य ही मिलकर काम कर सकते हैं। इसलिए जो सद्गुणों से युक्त हैं, उन लोगों के साथ मिलकर कार्य करने से ही वह व्यक्ति जो नया-नया गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता या करती है, सफल हो सकता है।

ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिनी को गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करना है। इसलिए आचार्य उसे अति उत्तम और महत्वपूर्ण उपदेश देता है कि धन, यश, विद्या, बुद्धि और सदाचार के बिना तू कभी सिद्धि प्राप्त नहीं कर सकता या सकती और इनकी प्राप्ति का एकमात्र साधन उनका सद् उपयोग ही है। उनके बुरे उपयोग से वही वस्तु विष जैसा और हानिकारक बन जाती है, जो सद् उपयोग से अमृतमय साबित होती है। यह बात कहने में बहुत सरल दीखती है, परन्तु गृहस्थ आश्रम में जहां इन्द्रियों (**senses**) को विशेष व्यवहार में लाना पड़ता है, वहां उसे निभाना कठिन काम है। मन को लुभाने वाले, इन्द्रियों को आनन्द देने वाले विषय, उस नर गृहस्थी को जिस ने धन और स्त्री प्राप्त की है, मर्यादा का उल्लंघन कर रोगों और दु:खों में फंसा देते हैं। यह सब जानकारी आचार्य समावर्त्तन संस्कार के अवसर पर अपने छात्रों को देता है।

विद्यार्थी अपनी ओर से भी कहता /कहती है कि सुनों भद्रजनों ! इन महाशय आचार्य ने मुझ पर बहुत उपकार किया है, जिन्हों ने मुझे पशुता से छुड़ा उत्तम विद्वान बनाया है। इसके बदले में अपने आचार्य का अनेक धन्यवाद दे और नमस्कार कर प्रार्थना करता /करती हूं कि जैसे आपने मुझे उत्तम विद्या देकर आनन्दित किया है, वैसे मैं भी अन्य विद्यार्थियों को आनन्दित करता / करती रहूंगा /रहूंगी और आपके किये उपकार को कभी नहीं भूलूंगा / भूलूंगी।

सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर, आप मुझे और पढ़ने-पढ़ानेहारे तथा सब संसार पर अपनी कृपादृष्टि से सबको सभ्य, विद्वान्, शरीर और आत्मा के बल से युक्त परोपकार आदि शुभ कर्मों को सिद्ध करने और कराने में चिर आयु, स्वस्थ, पुरुषार्थी और उत्साही करें जिससे परमात्मा की दृष्टि में उसके गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल अपने गुण, कर्म, स्वभाव करके धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि कर-कराकर सदा आनन्द में रहें।

Note: समावर्त्तन संस्कार को करने के लिए '**संस्कार विधि**' को देखें जिसमें मन्त्रों के साथ इस संस्कार को करने की विधि दी गई है।

****

विवाह संस्कार व्याख्या

सोलह संस्कारों में विवाह संस्कार तेहरवां स्थान रखता है। विवाह संस्कार का दूसरा नाम गृहस्थ आश्रम प्रवेश भी है। गृहस्थ आश्रम सब आश्रमों में ज्येष्ठ और श्रेष्ठ है। इस आश्रम का आरम्भ विवाह से होता है।

विवाह क्या है ? वैदिक विवाह एक उच्चकोटि का धार्मिक बन्धन है। विवाह शब्द दो शब्दों से बना है - वि - वाह = विवाह। 'वि' का अर्थ है विशेष और 'वाह' का अर्थ है वाहन् अर्थात् गाड़ी, रथ, मोटरयान आदि। विवाह एक ऐसी गाड़ी है, जिसमें स्त्री पुरुष दो पहियों के समान है, जिस में दोनों को एक समान रहना है। दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि जब दो प्राणी - स्त्री और पुरुष प्रेमपूर्वक आकर्षित होकर अपनी आत्मा, हृदय और शरीर से एक-दूसरे का सहयोगी बनने का सङ्कल्प करते हैं, उसे विवाह कहते हैं।

विवाह का एक अर्थ यह भी है कि गृहस्थ के जिम्मेवारियों को विशेष रूप से निभाना।

वर-वधू परीक्षा

विवाह से पहले, विवाह करने वालों की परीक्षा करनी चाहिए। इसका भाव यह है कि जो व्यक्ति स्त्रियों और पुरुषों के लक्षण पहचानने वाले हों, ऐसे कुशल विद्वानों से सुलक्षण-कुलक्षण की परीक्षा कराके प्रशंसित लक्षण वाली कन्या तथा पुरुष से विवाह करना चाहिये। किसी पुरुष का पुरुष और स्त्री का स्त्री वैद्य (**doctor**) द्वारा उनके गुप्त रोगों की परीक्षा भी करा लेनी चाहिए। उनकी मानसिक परीक्षा उत्तम विद्वान् पुरुष और विदुषी स्त्री से करा लेनी चाहिए। वधू और वर का आयु, परिवार, वास्तविक स्थान, शरीर और स्वभाव की परीक्षा अवश्य करें। अर्थात् दोनों एक दूसरे के बारे में जानकर अर्थात् दोनों के गुण, कर्म और स्वभाव एक जैसा हों और विवाह की इच्छा करने वाले हों तथा स्त्री की आयु से, वर की आयु दो-चार वर्ष ज्यादा होनी चाहिये। दोनों तरफ के परिवारों की भी छान-बीन करनी चाहिए। निकट सम्बन्धियों में विवाह कभी नहीं होना चाहिए।

निकट और दूर विवाह करने में गुण ये हैं :-

(१) जो बालक/बालिका छोटे उम्र से निकट रहते हैं, एक दूसरे के साथ खेलने, लड़ाई और प्रेम करते, एक दूसरे के अच्छाईयां तथा बुराईयां जानते और नग्न भी एक दूसरे को देखते हैं उनका परस्पर विवाह होने से प्रेम कभी नहीं हो सकता।

(२) जैसे पानी में पानी मिलाने से उस का गुण नहीं बदलता, वैसे अपने ही कुल में विवाह होने से अच्छे नसल के सन्तान उत्पन्न नहीं होते।

(३) जैसे दूध में मिश्री या अदरक मिलाने से उत्तम हो जाती है वैसे ही माता-पिता के कुल से दूर स्त्री-पुरुषों का विवाह होना उत्तम है।

(४) जैसे एक देश में रोगी हो वह दूसरे देश में वायु और खान पान के बदलने से रोगरहित होता है वैसे ही दूर स्थान में विवाह करने में उत्तमता है।

(५) निकट सम्बन्ध करने में एक दूसरे के निकट होने में परिवारों में विरोध होना सम्भव है क्योंकि हर रोज आना -जाना बना रहेगा। दूर विवाह में ऐसा नहीं होता तथा दूर के विवाह में प्रेम की डोरी लम्बी बढ़ जाती है निकट विवाह में नहीं।

(६) अगर कन्या के माता-पिता गरीब हैं तथा कन्या का विवाह निकट में ही हुआ है तो वो हर समय अपनी माता -पिता को मिलने आया करेगी और जब वापस जाएगी तब उन्हें कुछ न कुछ देना होगा। इस तरह से माता-पिता और भी गरीब हो जायेंगे। दूर विवाह में एसा नहीं होता।

बाकी अगले अंक में